श्री बालेश्वर अग्रवाल

भारतीय भाषाओं में समाचार प्रेषण की पत्रकारिता के पुरोधा और 'हिन्दुस्थान समाचार' संवाद समिति के संस्थापक श्री बालेश्वर अग्रवाल का नाम स्वतंत्र भारत के ऐसे सम्मानित संपादकों में पहला है जिन्होंने मुख्यधारा की हिन्दी पत्रकारिता को अँगरेजी समाचारों के अनुवाद की अनिवार्यता से मुक्त कराने का महान प्रयास किया है। पटना में स्थापित और 1957 में दिल्ली में एक सहकारी समिति के रूप में पंजीकृत हिन्दुस्थान समाचार की लोकप्रियता बहुत शीघ्र पूरे देश में फैल गई और कुछ ही वर्षों में भारतीय भाषाओं के सभी प्रमुख समाचार पत्रों के साथ-साथ ऑल इंडिया रेडियो में भी हिन्दुस्थान समाचार की सेवा प्रारम्भ हो गई। श्री बालेश्वर अग्रवाल ने 1965 से 1982 तक लगातार **हिन्दुस्थान समाचार** के प्रधान सम्पादक के रूप में कार्य कर इस संवाद समिति को एक उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण मुकाम तक पहुँचा दिया। इस अवधि के दौरान श्री अग्रवाल ने पूरे देश के सैकड़ों नवोदित पत्रकारों को भाषायी पत्रकारिता के क्षेत्र में जोड़ने का एतिहासिक कार्य किया था। उनमें से अनेक आज भारतीय पत्रकारिता में महत्वपूर्ण पदों पर प्रतिष्ठित हैं। कुछ वर्षों के बाद ही श्री बालेश्वर अग्रवाल के प्रयासों के कारण देश की सीमा लाँघकर नेपाल तथा मॉरीशस आदि देशों में भी हिन्दुस्थान समाचार से समाचार भेजे जाने लगे।

श्री बालेश्वर अग्रवाल विगत 30 वर्षों से प्रवासी भारतीयों को एक मंच पर लाने के लिये प्रयासरत हैं। इनके सद्प्रयासों से सन् 1978 में 'अन्तरराष्ट्रीय सहयोग परिषद' की स्थापना हुई थी। श्री अग्रवाल इस संस्था के महासचिव हैं और उनके नेतृत्व में अनेक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न हो चुके हैं। इन समारोहों में विदेशों में बसे भारतवंशी सांसदों का प्रथम सम्मेलन, 1998 में सन् 2000 में प्रवासी भारतीय सम्मेलन तथा 2001 में भारतीय मूल के लोगों का छठा सम्मेलन उल्लेखनीय है। श्री अग्रवाल के दिशा निर्देश में विगत 22 वर्षों से अन्तरराष्ट्रीय सहयोग परिषद की मासिक बुलेटिन प्रकाशित हो रही है। जिसमें विश्व-स्तर पर प्रवासी भारतीयों के बारे में महत्वपूर्ण सूचना तथा संदर्भ सामग्री नियमित प्रकाशित होती है। श्री अग्रवाल के सम्पादन में 'मदर इंडिया चिल्ड्रन अब्राड' के 13 खंड प्रकाशित हो चुके हैं।

भारत सरकार द्वारा भारतवंशियों के लिये गठित उच्च स्तरीय समिति के सदस्य के रूप में श्री बालेश्वर अग्रवाल ने संसार भर के भारतवंशियों की स्थितियों का गहन अध्ययन किया है तथा उनकी समस्याओं के समाधान के लिये निरंतर कार्यरत रहे हैं। उन्होंने विश्व के अनेक देशों का अनेक बार दौरा किया है। श्री अग्रवाल ने 'हिन्दुस्थान समाचार वार्षिकी' का प्रकाशन प्रारम्भ कर हिन्दी पत्रकारिता जगत में एक नया मानदंड स्थापित किया। हिन्दी की प्रसंग लेख सेवा, 'फीचर एजेंसी' के प्रधान सम्पादक के रूप में श्री अग्रवाल ने भारतीय सभ्यता, संस्कृति और जीवन शैली को पाठकों तक पहुँचाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

श्री बालेश्वर अग्रवाल को हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवा के लिये भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के द्वारा सन् 2002 में सम्मानित किया गया था। यह सम्मान भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने उन्हें प्रदान किया था।

श्री बालेश्वर अग्रवाल आज 88 वर्ष की आयु में भी भारतीय संस्कृति तथा मूल्यों के प्रचार-प्रसार के लिये सतत् समर्पित भाव से कार्य कर रहे हैं ऐसे पुरोधा पत्रकार और सांस्कृतिक राजदूत को डी.लिट् की मानद उपाधि प्रदान करके विश्वविद्यालय गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

श्री राधेश्याम शर्मा

हिन्दी पत्रकारिता जगत में संपादन और शिक्षण के दोनों क्षेत्रों में श्री राधेश्याम शर्मा का नाम सम्मान और आदर का प्रतीक है। जीवन मूल्यों के प्रति निष्ठा, विश्वसनीयता और प्रतिबद्ध पत्रकार के रूप में श्री शर्मा के व्यक्तित्व की सुगंध मध्यप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब और हिमाचल सहित सम्पूर्ण हिन्दी क्षेत्र में व्याप्त है। त्रेपन वर्ष पूर्व दैनिक 'युगधर्म' के संवाददाता के रूप में पत्रकारिता की यात्रा आरम्भ करने वाले श्री राधेश्याम शर्मा ने 'युगधर्म' के संपादक पद के अतिरिक्त 'दैनिक ट्रिब्यून' चंडीगढ़ के संपादक (1982 से 1990 तक) पद का दायित्व निभाया था। श्री शर्मा ने चंडीगढ़ से प्रकाशित 'दैनिक भास्कर' और चंडीगढ़ तथा धर्मशाला से प्रकाशित दैनिक 'दिव्य हिमाचल' के संपादकीय सलाहकार की भूमिका का निर्वाह भी किया था।

मीडिया शिक्षण से जुड़े सभी के लिए यह गौरव का विषय है कि श्री राधेश्याम शर्मा को माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के संस्थापक-महानिदेशक के पद को सुशोभित करने का अवसर मिला था। देश में पत्रकारिता और जनसंचार के प्रथम विश्वविद्यालय के प्रथम महानिदेशक के रूप में चार वर्ष (सितम्बर 1990 से अक्टूबर 1994) के अपने कार्यकाल में श्री शर्मा ने इस विश्वविद्यालय को न केवल स्थापित किया बल्कि प्रतिष्ठा और लोकप्रियता की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया था। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पत्रकारिता और जनसंचार विषयों के शिक्षण से उनका गहरा जुड़ाव है। वे कॉमनवेल्थ एसोसिएशन फॉर जर्नलिज्म एजुकेशन एण्ड कम्युनिकेशन (भारतीय चेप्टर) के उपाध्यक्ष और हिमाचल विश्वविद्यालय में पत्रकारिता के विजिटिंग प्रोफेसर भी रहे हैं। हरियाणा सरकार ने श्री शर्मा को दो वर्ष (2005 से 2007) तक साहित्य अकादमी के निदेशक का महत्वपूर्ण दायित्व भी सौंपा था।

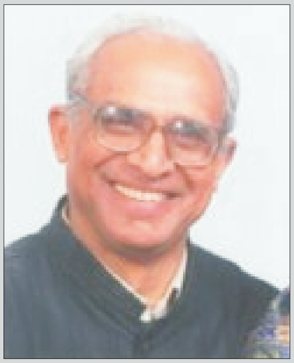

हरियाणा साहित्य अकादमी ने श्री राधेश्याम शर्मा की दो पुस्तकों- 'जनसंचार' और 'हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम' का प्रकाशन किया है। श्री राधेश्याम शर्मा को वर्ष 2000 में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा का प्रतिष्ठित गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार तत्कालीन राष्ट्रपति स्वर्गीय के.आर. नारायण ने प्रदान किया था। पत्रकारिता के क्षेत्र में सुदीर्घ सेवाओं के लिए हरियाणा साहित्य अकादमी का बाबू बालमुकुंद सम्मान (2002), शिमला में बलराज साहनी अवार्ड (1985) और दिल्ली में मातृश्री अवार्ड (1982) श्री शर्मा को प्रदान किए गए। माधवराव सप्रे समाचारपत्र संग्रहालय भोपाल ने श्री राधेश्याम शर्मा को 'लाल बलदेव सिंह सम्मान' से विभूषित किया है। उत्तरप्रदेश की हिन्दी-उर्दू साहित्य अवार्ड कमेटी ने उन्हें भारती भूषण सम्मान प्रदान किया है।

पत्रकारिता के अपने दीर्घकालीन अनुभव में श्री राधेश्याम शर्मा को पूरे देश के भ्रमण के साथ साथ हर क्षेत्र के महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मिलने और उनके विचारों को प्रकाशित करने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ है। इनमें राजनीति, शिक्षा, धर्म और आध्यात्म से जुड़ी विभूतियाँ शामिल हैं। श्री शर्मा को पेरिस, रोम के अलावा पाकिस्तान, जर्मनी और रूस जाकर वहाँ के समाज और जनजीवन को निकट से देखने के अवसर भी लगातार मिलते रहे हैं। मीडिया और शिक्षण के अपने विशाल अनुभवों से अपने पाठकों, दर्शकों तथा विश्वविद्यालय के छात्रों को लाभान्वित करने वाले अपने आद्य महानिदेशक श्री राधेश्याम शर्मा को डी.लिट् की उपाधि से विभूषित करके यह विश्वविद्यालय गौरवान्वित अनुभव कर रहा है।

श्री अभय छजलानी

सामाजिक सरोकारों की पत्रकारिता के प्रबल पक्षधर श्री अभय छजलानी मूल्यों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता, लोकजीवन में सांस्कृतिक सन्निष्ठा और जनसाधारण के दैनंदिन जीवन पर प्रभाव डालने वाली छोटी-से-छोटी घटना के प्रति भी सजग दृष्टि वाले संपादक के रूप में जाने जाते हैं। एक समाचारपत्र समूह के संचालक होने के बावजूद श्री अभय छजलानी ने अपने ही समाचारपत्र दैनिक 'नईदुनिया' में सन 1955 में प्रशिक्षु पत्रकार के रूप में कार्य आरंभ किया और अपनी प्रतिभा, परिश्रम और अनुभव से 'नईदुनिया' को आर्थिक सुदृढ़ता तथा लोकप्रियता की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। चार अगस्त 1934 को जन्मे श्री अभय छजलानी ने स्वनामधन्य संपादक श्री राहुल बारपुते से 'नईदुनिया' में ही पत्रकारिता की शिक्षा ग्रहण की तथा समाचारपत्र प्रबंधन में लोक सेवा परक पत्रकारिता के संस्कार अपने यशस्वी पिता बाबू लाभचंद छजलानी से सीखे। प्रखर संपादक श्री राजेन्द्र माथुर और श्री अभय छजलानी ने वर्षों तक साथ-साथ काम करते हुए क्षेत्रीय समाचारपत्र 'नईदुनिया' को राष्ट्रीय पहचान और प्रतिष्ठा दिलाई। हिन्दी पाक्षिक पत्रिका 'खेल हलचल' और आर्थिक हिन्दी दैनिक 'भावताव' के भी वे संपादक रहे हैं।

श्री अभय छजलानी ने वेब दुनिया के माध्यम से वेब पत्रकारिता में भी नवाचारी कार्य किया है और वेब पत्रकारिता के श्रेष्ठ मानक स्थापित किये हैं। श्री अभय छजलानी ने हिन्दी भाषा में पहला पोर्टल 'वेबदुनिया' भी स्थापित किया है। श्री छजलानी की भाषा सजगता के कारण 'नईदुनिया' पत्र समूह की भाषा ने श्रेष्ठ हिन्दी प्रयोग के मानदंड स्थापित किये हैं। बाजारतंत्र के दबाव के बावजूद, श्री छजलानी ने मिलावटी भाषा के प्रयोग को अस्वीकार करते हुए हिन्दी की शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया और हिन्दी के भाषा सामर्थ्य के विकास में गहरा योगदान दिया है।

श्री अभय छजलानी ऐसे विरले समाचार-पत्र संचालक और संपादक हैं जो पत्रकारिता के हुनर को निखारने की दिशा में सदैव सचेष्ट रहे। उन्होंने सन 1965 में थामसन फाउंडेशन की मदद से ब्रिटेन के कार्डिफ विश्वविद्यालय में पत्रकारिता का स्नातक पाठ्यक्रम पूरा किया था। प्रेस इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित अनेक कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भी आपने निरन्तर योगदान दिया।

भारतीय भाषायी समाचारपत्र संगठन (इलना) के तीन बार अध्यक्ष रहे श्री अभय छजलानी इंडियन न्यूज पेपर्स सोसायटी, भारतीय प्रेस परिषद, एडीटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया तथा अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं से सम्मानित सदस्य हैं। भारत सरकार और मध्यप्रदेश सरकार की विभिन्न सलाहकार समितियों से सम्मानित सदस्य रहे हैं। श्री अभय छजलानी को माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय समेत अब तक दर्जनों संस्थानों ने सम्मानित किया है। नियमित लेखन और बेबाक विश्लेषण अभय जी के व्यक्तित्व का स्वभाव बन चुका है। देश की हिन्दी पत्रकारिता को 'नईदुनिया' से निकले युवा पत्रकारों की जो पौध समृद्ध कर रही है उसको तराशने में अभय जी का भी बड़ा योगदान है। वर्ष 2008 में 'मंथन' और 'चिन्तन' के रूप में प्रकाशित दो पुस्तकों में उनके अध्ययन और अनुभव का निचोड़ विद्यमान है। गणतंत्र दिवस-2009 के अवसर पर श्री अभय छजलानी को 'पद्मश्री' अलंकरण से विभूषित करने की घोषणा उनके सम्मान श्रृंखला की नवीनतम उपलब्धि है। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल श्री अभय छजलानी को उनके उत्कृष्ट अकादमिक अवदान के लिए डी. लिट् की मानद उपाधि प्रदान करते हुए गौरव का अनुभव कर रहा है।